ISSN 2395-051X

"स्वामी विवेकानन्द और आध्यात्मवाद"

डॉ. बिन्दु श्रीवास्तव
प्राध्यापक अर्थशास्त्र
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश -

विवेकानंद पहले व्यक्ति थे जिन्होंने पश्चिम जगत के लोगों का भ्रम दूर कर भारतीय ज्ञान और विद्वता का डंका सारी दुनिया में बजाया। धर्म सम्मेलन के बाद स्वामी जी ने विश्व के अनेक देशों की यात्रा कर अध्यात्म, भारतीय सनातन धर्म का प्रचार योग इत्यादि विषयों पर अनेक व्याख्यान दिये और उनके व्याख्यानों का संग्रह रामकृष्ण मिशन द्वारा अनेक पुस्तकों जिसमें, "राजयोग", "कर्मयोग", ज्ञानयोग एवं मुक्तियोग का प्रकाशन किया। इतना ही नहीं अध्यात्म की डोर के साथ में उन्होंने नारियों की शिक्षा पर एवं युवाओं में चेतना भरने के लिए कहा था- कि आज के युवा को शारीरिक प्रगति से ज्यादा आंतरिक प्रगति करने की जरूरत है ।

मुख्य शब्द - विवेकानन्द, आध्यात्मवाद, चरित्र।

"यदि आप भारत को जानना चाहते हैं तो विवेकानन्द को पढ़िए उनमें आप सब कुछ सकारात्मक ही पाएँगे, नकारात्मक कुछ भी नहीं।"

आज के इस वातावरण में स्वामी विवेकानन्द के बारे में कहे गए टैगोर के इस कथन को रखकर हम विश्लेषण करते हैं तो सबसे ज्यादा व्यक्ति को सकारात्मक सोच की ही आवश्यकता है। क्योंकि मानव चांदी के कुछ टुकड़ों के पीछे दौड़ता रहता है और उनकी प्राप्ति के लिए एक सजातीय को भी खो देने में नहीं हिचकता पर यदि वह स्वयं पर नियंत्रण रखे तो कुछ ही वर्षों में अपने चरित्र का ऐसा सुंदर विकास कर सकता है कि यदि वह चाहे तो लाखों रुपए उसके पास आ जाए तब वह अपनी इच्छा शक्ति से जगत का परिपालन कर सकता है और आज जब मानव कोविड 19 जैसी महामारी से गुजर रहा है तो उसे परस्पर एक दूसरे की सहायता करने के लिए स्वामी के द्वारा कहे वचनों को याद करना चाहिए।

भागवन भुवन भास्कर के समान तैजोद्दप्ति भाल वाले बिले (स्वामी विवेकानन्द) का जन्म 12 जनवरी 1863 को श्री विश्वनाथ दत्त एवं भुवनेश्वरी की छठी सन्तान के रूप में हुआ। बिले के अन्नप्राशन के बाद उनका नाम नरेन्द्रनाथ रखा। नरेन्द्रनाथ में बचपन से ही असाधारण बुद्धि, तेजस्विता, साहस, स्वाधीनता मनोभाव सहृदयता, वधुप्रीत और खेल के प्रति आकर्षण का भाव स्पष्ट परिलक्षित होता था और नरेन्द्रनाथ को अपनी माँ से रामायण और महाभारत के प्रसंगों को सुनने में बहुत अच्छा लगता था स्वभाव से चंचल होने के बावजूद भी घंटों इन प्रसंगों को चुपचाप सुना करते थे और राम सीता की मूर्ति के सामने प्रतिदिन ध्यानमग्न बैठे रहते और हनुमान जी की राम के प्रति सेवाभाव के कार्यों को सुनना उन्हे बहुत अच्छा लगता था और वे पृथ्वी पर अभी भी हैं इसलिए उन्हें देखने

के लिए व्याकुल हो जाते थे। परन्तु एक दिन वे अपनी माँ से बोले कि अब मैं सीताराम की पूजा कैसे करूँ रामचंद्र जी ने तो विवाह कर लिया था क्योंकि नरेन्द्रनाथ विवाह के विरोधी थे तब माता ने कहा था कि कल से तुम शिवजी की पूजा किया करो। और उन्होंने एक शिव प्रतिमा स्थापित कर उसकी पूजा प्रतिदिन आँख मूंद कर ध्यानमग्न हो कर करते और तभी से नरेन्द्रनाथ के रूप में एक "योगी" अर्थात् स्वामी विवेकानन्द अपना रूप विकसित करने लगे थे। समय के साथ साधु-सन्यासियों के प्रति उनका आकर्षण बढ़ता ही चला गया परन्तु जगत के प्रति निष्ठुर नहीं हुए। उनका ममताशील हृदय विपदाओं से घिरे हुए व्यक्तियों की सहायता के लिए उन्हे हमेशा प्रेरित और अग्रसर करता रहा। शिक्षा ग्रहण करने के साथ ही नरेन्द्र जी ने दर्शनशास्त्र के प्रमुख ग्रंथों का अध्ययन, प्रमुख पाश्चात्यविदों जैसे मिल के मतवाद, डेकार्ट का अहंवाद डार्विन के विकासवाद, ह्यूम और बेन की नास्तिकता स्पेंसर के अज्ञेयवाद आदि का गहन अध्ययन किया। अपने विद्यार्थी जीवन में ही उनकी आध्यात्मिक ऊर्जा परब्रह्म की खोज की ओर जागृत हो गई थी धीरे-धीरे उनके मन में ईश्वर और इस सृष्टि के सत्य को जानने की तीव्र इच्छा उत्पन्न हुई वह सोचते "भगवान क्या है", कहां पर रहता है, उसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है वह सबसे पूछते पर किसी के पास कोई उत्तर न था वे निराश हो जाते और उनका मन ईश्वर का पता लगाने के लिए छटपटाने लगता इस प्रश्न के उत्तर के लिए वे देवेन्द्रनाथ ठाकुर से मिले पर वहां भी निराशा हाथ लगी कई सम्प्रदायों व धर्मों के आचार्यों के पास यही प्रश्न के उत्तर में भटकते रहे पर कोई भी उनकी जिज्ञासा को पूरा न कर सका।

फिर कालेज के समय अध्यापक विलियम हेस्टी उनकी प्रतिभा से मुग्ध होकर कहा करते कि नरेन्द्रनाथ सचमुच में एक जीनियस है मैं बहुत स्थानों में घूमा परंतु इसके अनुरूप बुद्धि एवं बहुमुखी प्रतिभा नहीं देखी। नरेन्द्रनाथ ने सर्वप्रथम विलियम हेस्टी से ही सुना था कि दक्षिणेश्वर में रामकृष्ण परमहंस समाधि में लीन होते हैं और महाकाली माता से साक्षात्कार होता है यह सुनकर नरेन्द्रनाथ के तड़पते हृदय को एक दिशा मिली और उनका मन परमहंस से मिलने के लिए व्याकुल हो गया। और उनकी पहली मुलाकात परमहंस से कलकत्ता में सुरेन्द्रनाथ मित्र के आवास पर हुई और दूसरी मुलाकात दक्षिणेश्वर में 1882 में ही हुई तब रामकृष्ण ने नरेन्द्रनाथ से कहा कि मैं तुम्हारी कब से प्रतीक्षा कर रहा था मैं जानता हूँ कि तुम सप्तर्षिमंडल के ऋषि हो नर रूपी नारायण हो जीवों के कल्याण की कामना से तुमने इस शरीर को धारण किया है। रामकृष्ण परमहंस जो कि खुद एक आध्यात्मिक महापुरुष थे उनके ऐसे वचनों से ही स्पष्ट हो जाता है कि विवेकानन्द कोई साधारण मानव नहीं बल्कि आध्यात्म दर्शन और भारतीय संस्कृति को जीवन देने वाली संजीवनी बूटी, मानवीय एवं नैतिक मूल्यों को पुनः जागृत करने के लिए एक सजग प्रहरी, ज्ञानसूर्य से परिपूर्ण आध्यात्मिक गुरु थे फिर भी परमहंस गुरू की बात नरेन्द्रनाथ के समझ से परे थी परंतु वे जिस प्रश्न के उत्तर के लिए श्री रामकृष्ण के पास पहुंचे थे तो उन्होंने सीधे प्रश्न पूछ ही लिया "महाराज क्या आपने ईश्वर के दर्शन किए हैं"?

शांतभाव से श्री रामकृष्ण परमहंस ने तत्काल उत्तर दिया "हाँ मैंने ईश्वर के दर्शन किए हैं मैं जिस प्रकार तुम्हें देख रहा हूँ इससे भी अधिक स्पष्ट रूप से उन्हे देखा है फिर पल भर रुक कर उन्होंने पूछा - क्या तुम भी उन्हें देखना चाहते हो? यदि हाँ तो तुम मेरे कहे अनुसार कार्य करो तुम भी ईश्वर को देख सकोगे।"

श्री रामकृष्ण की इन बातों को उनका आनंद उत्तल तरंगों का रूप लेने लगा परंतु कुछ ही क्षणों में गहन चिंता में डूब गए इस पथ पर जाने के लिए तो पूर्ण रूप से आत्मसमर्पण कर कठोर साधना करनी होगी। इतनी

विलक्षणता देखकर भी नरेन्द्रनाथ ने उन्हे अपना गुरू नहीं बना सके क्योंकि वे ब्रह्मसमाज के आदर्श पथ के पथिक थे और अकस्मात् अपना मार्ग और आदर्श बदल लेना संभव नहीं था परंतु संयोगवश एक घटना घटी जिससे नरेन्द्रनाथ के कारण परमहंस का अशिष्टता का भाजन बने इस घटना से क्षुब्ध एवं मर्माहत होकर उन्होंने ब्रह्मसमाज में जाना छोड़ दिया और रामकृष्ण परमहंस के श्रीचरणों में बैठने के लिए दक्षिणेश्वर जाना शुरू कर दिया। उनका मानना था कि पुरुष अपनी दृढ़ता और अटूट संकल्प के साथ मस्तक ऊँचा करके भगवान की आराधना करें। रामकृष्ण जानते थे कि नरेन्द्रनाथ दैवी शक्ति से उत्पन्न एक विशुद्ध साधन है इसीलिए उन्होंने निस्वार्थ प्रेम की अजस्त्र वर्षा कर उन्हें अनुपम आध्यात्मिक पथ का पथिक बनाया था।

दिव्य स्पर्श :

एक बार नरेन्द्रनाथ एक महिने गुरु के पास रहे तब परमहंस ने उन्हें अपने पास बैठा लिया कुछ वर्षों अद्भुत भावान्तर हुआ उसे नरेन्द्रनाथ ने अपने शब्दों में लिपिबद्ध इस प्रकार से किया अकस्मात् मेरे निकट आकर उन्होंने अपने दाएँ पाव से छू लिया उस स्पर्श से क्षण भर में ही मुझे एक अपूर्व अनुभूति हुई और तब मैं चिल्ला उठा अजी आपने मेरा क्या कर डाला तो कहने लगे अब रहने दे बाकी समय आने पर होगा और जब दूसरी बार स्पर्श किया तो वैसा ही हुआ उनका ब्रह्मज्ञान विलुप्त हो गया और थोड़ी ही देर में उनका ब्रह्मज्ञान लौटता हुआ सा महसूस हुआ। और इसके बाद से ही वे मनन चिंतन करने लगे।

1884 में पिता के निधन के बाद में भी परमहंस ने उन्हें सहायता के रूप में माँ काली से सब माँगने को कहा पर नरेन्द्रनाथ ने हाथ जोड़ प्रार्थना में कहा "माँ विवेक दो, वैराग्य दो, ज्ञान दो, भक्ति दो अर्थात् आर्थिक संकट के समय भी नरेन्द्रनाथ अपने सुख के लिए कुछ नहीं माँगा पर माँ काली पर विश्वास हो गया और परमहंस की इच्छा भी पूरी हुई। क्योंकि वे उन्हें स्वामी विवेकानन्द बना रहे थे। और अब वे केवल पाश्चात्य दर्शन के ग्रंथ नहीं बल्कि "उपनिषद", "अष्टावक्रसंहिता", "पंचदर्शी", विवेक चूड़ामणी आदि का अध्ययन भी करने लगे। फिर अपने गुरू से वे निर्विकल्प समाधि में रहना माँगना चाहते थे और वे बोल उठे-"शुकदेव की तरह निर्विकल्प समाधि द्वारा सदैव सच्चिदानंद सागर में डूबा रहना चाहता हूँ। इस पर परमहंस ने नरेन्द्रनाथ से कहा बार-बार यही कहते हुए लज्जा नहीं आती? समय आने पर वटवृक्ष की तरह बढ़कर सैकड़ों लोगों को शान्ति की छाया देगा और कहा आज अपनी मुक्ति के लिए व्यग्र है इतना क्षुद्र आदर्श है तेरा। गुरू के समझाने पर जब नरेन्द्रनाथ नहीं माने तो रामकृष्ण ने कहा अच्छा जा निर्विकल्प समाधि होगी मृत्यु से पूर्व परमहंस ने सारी शक्तियाँ नरेन्द्रनाथ के शरीर में प्रविष्ट कर दी पर इस पर उन्हें रोना आया तब नरेन्द्रनाथ ने रोने का कारण पूछा तो परमहंस बोले-नरेद्र तुझे अपना सर्वस्व देकर फकीर हो गया इस शक्ति के द्वारा तू जगत के बहुत सारे काम सम्पन्न करेगा और उसके समाप्त होते ही मूल स्थान को लौट जाएगा। इसके बाद उन्होंने सन्यास का निर्णय लिया सन्यास ग्रहण करने के बाद जब वे एक परिव्राजक के रूप में भारत भ्रमण पर थे तब खेतड़ी के महाराज ने उन्हें विवेकानंद का नाम दिया और उन्होंने ही अमेरिका में हो रहे विश्व धर्म सम्मेलन में भारत के प्रतिनिधि के रूप में भाग लेने के लिए भेजा। और इस सभा के स्वागत में स्वामी जी ने जैसे ही श्रोताओं को संबोधित करते हुए कहा-अमेरिका के भाईयो और बहनों तालियों की गड़गड़ाहट से वातावरण गूंज उठा और उन्होंने जैसे ही हिन्दू धर्म और भारत के आध्यात्म की बात शुरू की तो अमेरिका ही नहीं दुनियाभर के विद्वानों का बड़ा समूह चुपचाप सुनता रहा एवं विपुल अभिनंदन किया 17 दिन चलने वाले इस धार्मिक सम्मेलन में सुनने वालों की संख्या

निरंतर बढ़ती चली गई। क्योंकि उन्हें भटकने की बजाए एक ही दिशा में ध्यान केंद्रित रहे और अंत तक अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रयास एवं अपनी पूरी शक्ति का प्रयोग करना चाहिए किसी के सामने सिर मत झुकाओ जब तक तुम यह अनुभव नहीं करते कि तुम देवों के देव हो तब तक तुम मुक्त नहीं हो सकते।

उपरोक्त विहंगम विश्लेषण स्पष्ट करता है कि ऐसा अनूठा एवं विरला गुरू शिष्य परम्परा का उदाहरण और कहीं नहीं मिल सकता कि गुरू ने शिष्य को अध्यात्म से लबालब भर कर उसके कल्याण की अंतिम सीढ़ी तय की हो। मेरी व्यक्तिगत निजी राय है कि स्वामी जी का व्यक्तित्व और कृतित्व इतना अद्वितीय एवं अनुपम है कि उससे प्रेरणा केवल युवा वर्ग ही नहीं बल्कि मानव जगत लेता है। उनके व्यक्तित्व की आभा सभी को आलोकित करती है। स्वामी जी के शिष्य ने लिखा है- "वे एक ऐसे व्यक्ति हैं जो सभी परिस्थितियों में चमकेंगे उनकी उपस्थिति एक आशीर्वाद होती है उनकी चुम्बकीय वक्ता शक्ति, अलौकिक सरलता और चारित्रिक पवित्रता उनके अद्वितीय गुण थे।" स्वामी जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर विभिन्न विचारकों और समीक्षकों ने अपनी अध्ययनशीलता और लेखनी को मांजा है परंतु हमेशा ही कुछ न कुछ शेष रह जाता है वह है स्वामी जी की कृतियों की विराटता, विचारों की असीमता और कार्यों की विविधता। 39 वर्षीय जीवनगाथा में इतनी गहराई, व्यापकता और विशिष्टताओं का मुझे और कहीं दर्शन दुर्लभ लगता है उनके सम्मोहक और प्रेरक व्यक्तित्व में घुला अमृतमयी कृतित्व मुझे सर्वाधिक आकर्षित करता है मन, नयन और विचार उन पर केन्द्रित हो जाते हैं और ऐसा लगता है कि स्वामी जी के जीवन वृतांत को पुनः पुनः खोलू और उनकी दिव्य चमत्कृत आध्यात्मिक मनोभावों एवं कृतियों का बारंबार अध्ययन और चिन्तन करूं। इसलिए आज भी हम 12 जनवरी को "राष्ट्रीय युवा दिवस" के रूप में उस अद्भुत आध्यात्मिक संत देशभक्त, ओजस्वी, प्रखर वक्ता, गंभीर विचारक, भारतीय सनातन धर्म के प्रचारक एवं उद्धारक तथा आने वाली कई पीढ़ियों के मार्गदर्शक को अपनी स्मृतियों में हमेशा संजोय रखते हैं। भारत का ऐसा महापुरुष जिसमें "विवेक और आनंद" भरा है वह है विवेकानन्द उसे मेरा शत्-शत् नमन्।

संदर्भ :-

1. रंजन राजीव, युगदृष्टा विवेकानंद प्रभात पेपर बैक्स, 4/19 आसिफ अली रोड, नई दिल्ली, पृष्ठ 15, 18, 55
2. कुमार शान्ता, विश्व विजेता विवेकानंद भारतीय प्रकाशन संस्थान 24/4855, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली.
3. ठाकरान, स्वामी विवेकानंद सम्पूर्ण वाङ्.मय पुष्पांजलि प्रकाशन एफ-46, गली नं. 5, शिवाजी मार्ग करतार नगर, दिल्ली.

❖ ❖ ❖